गुर्दा प्रत्यारोपण

रोगीओं के लिये आवश्यक जानकारियाँ

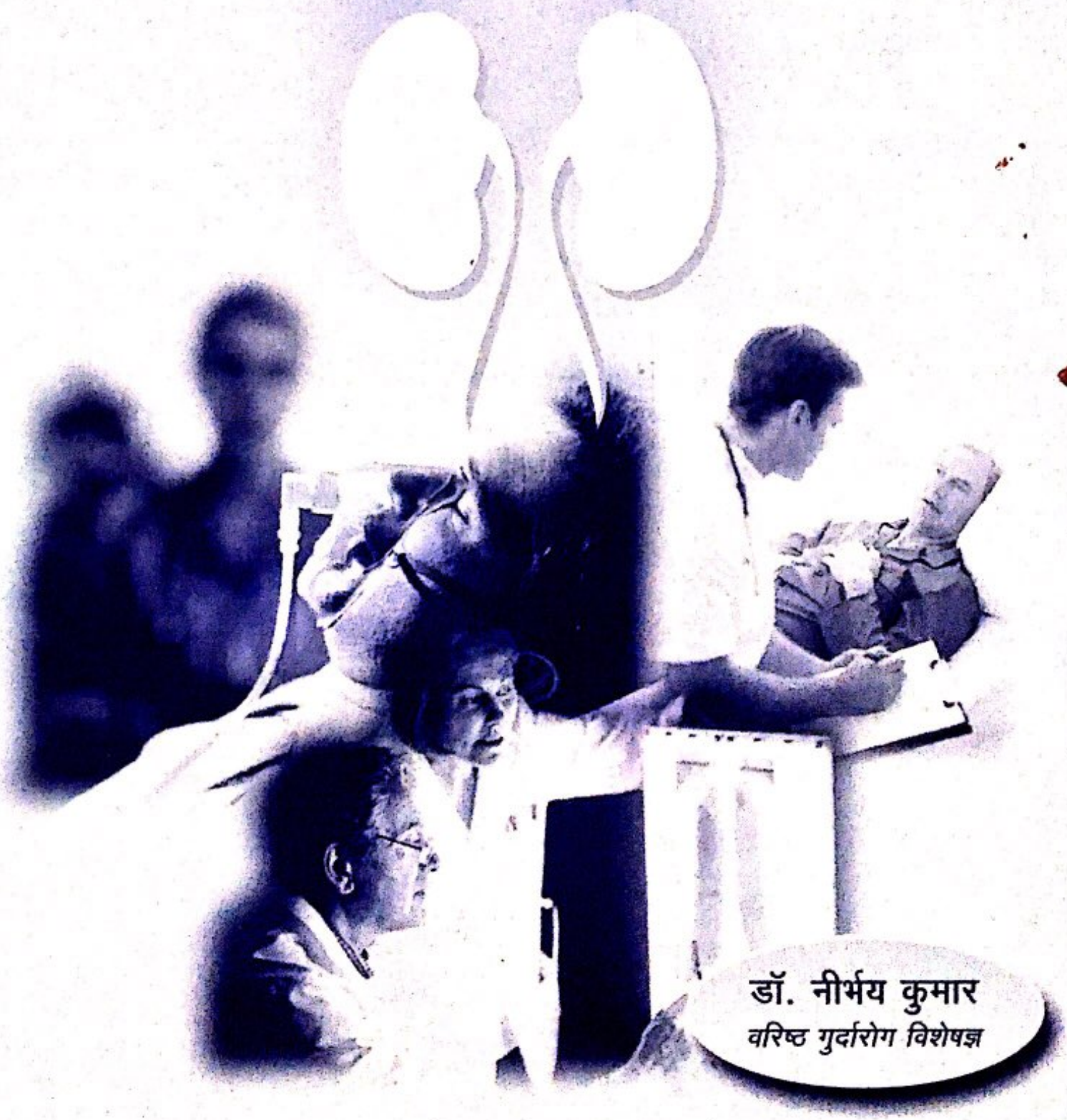

डॉ. नीर्भय कुमार
वरिष्ठ गुर्दारोग विशेषज्ञ

Scanned with CamScanner

गुर्दा प्रत्यारोपण के बाद : रोगीओ के लिये आवश्यक जानकारियाँ

गुर्दा प्रत्यारोपण, दोनों गुर्दों के स्थाई तौर पर खराब हो जाने पर सबसे उपयुक्त और सफल उपचार विधि है। चिक्तसा शास्त्र में गुर्दो की इस बीमारी का नाम क्रोनिक रीनल फेल्योर या सी.आर.एफ. दिया गया है। गुर्दा प्रत्यारोपण के सम्बन्ध में रोगी और उसके परिचाय को में विभिन्न प्रश्न और संशय बने रहते है। इस बुकलेट का ध्येय गुर्दा प्रत्यारोपण के लिये जानेवाले तथा गुर्दा प्रत्यारोपित रोगीओं की शंकाओ का समाधान करना है।

१. नया गुर्दा कहाँ और कैसे लगाया जाता है ?

गुर्दा प्रत्यारोपण में एक स्वस्थ व्यक्ति का गुर्दा (गुर्दा दाता), जिसका ब्लड ग्रुप और टिशू मेल खाता हो, शल्य चिक्तसा द्वारा निकालकर उसे विशेष शल्य चिक्तसा द्वारा रोगी के पेट के नीचे वाले भाग में दाई या बाईं (प्रायः दायी) और प्रत्यारोपित कर दिया जाता है। उस विधि में नये गुर्दे की खून की नसों को रोगी के पेट के नीचे वाली रक्त वाहिनीओं से जोड दिया जाता है। नये गुर्दे की मूत्र वाहिनी (युरीटर) को रोगी के मसाने (ब्लैडर) से जोड दिया जाता है। इस पूरी प्रक्रिया में रोगी रोग ग्रस्त दोनों गुर्दो को निकालने की कोई आवश्यकता नहीं होती है।

२. क्या गुर्दा प्रत्यारोपण के बाद नया गुर्दा वह सभी कार्य करता है, जो एक स्वस्थय व्यक्ति के गुर्दे करते है ?

प्रत्यारोपण के बाद नया गुर्दा सभी आवश्यक कार्य जैसे शरीर में होनेवाली क्रियाओं (मेटाबॉल्जिम) के फलस्वरुप पैदा हुअी गंदगी (जहरीले पदार्थो) को रक्त से निरन्तर छान कर उन्हें मूत्र द्वारा बाहर निकालना, शरीर में पानी, नमक और अन्य तत्वों की मात्रा का नियंत्रण करना, शरीर में रक्त बनने की प्रक्रिया का संचालन करना और शरीर की हड्डीओं में कैलशियम और फास्फोरस की मात्रा का नियंत्रण करना, करने लगता है।

प्रायः नये गुर्दे को पूर्ण कार्य करने में एक से दो हफ्ते का समय लग जाता है।

३. क्या रोगी को दवाअें जीवनभर खानी पडती है ?

नये गुर्दे को रोगी का शरीर बहिष्कृत (रिजेक्ट) न कर दे, इसके लिये कुछ दवाअें, जिन्हें इम्युनो सर्पेशन दवाअें कहते है, जीवन पर्यंत लेनी पडती है। इन दवाओं की संख्या और मात्रा काफी कुछ गुर्दा दाता और रोगी के बीच टिशू मैच पर निर्भर करता है। यदि गुर्दा दाता रोगी का रक्त सम्बधी - माता, पिता, भाई या बहन है तो इन दवाओं की संख्या और मात्रा काफी कम हो

Scanned with CamScanner

जाती है। इन दवाओं को प्रतिदिन एक नियमित समय पर लेना आवश्यक है, वरना आपके शरीर का प्रतिरोधक तन्त्र (इम्यून सिस्टम) नये गुर्दे को नष्ट कर सकता है।

४. यह आवश्यक दवाओं क्या है और क्या इनके दुष्प्रभाव (साईड एफेक्ट) भी है ?

इन दवाओं में से तीन दवाओं प्रमुख है। हालाकि नये शोध के साथ कई और प्रभावी और सुरक्षित दवाओं भी उपलब्ध हो गयी है, परन्तु महंगी होने के कारण इनका प्रयोग अभी सीमित ही है।

१. प्रेडनी सोलोन (वाइसोलोन) - यह स्टीरायड समूह की दवा है। यह सस्ती और महत्वपूर्ण दवा है। प्रत्यारोपण के बाद जैसे जैसे समय निकलता है, इसकी मात्रा कम होती जाती है। इसके दुष्प्रभावों मे पेट में जलन, शरीर के कुछ भागों (जैसे चेहरे, पेट) पर सूजन तथा हड्डीओं की कमजोरी प्रमुख है।

२. ऐजाथाओप्रीन या ऐजोरान - यह भी सस्ती और प्रभावी दवा है, लेकिन इसके दो प्रमुख दुष्प्रभाव है। बोन मैरो (अस्थिमज्जा) पर दुष्प्रभाव जिसके कारण रक्त की श्वेत और लाल कणिकाये (डब्लू वी सी और आर वी सी) की संख्या कम हो सकती है। इसी कारण इस औषधि के प्रयोग के दौरान रक्त की नियमित जाँच आवश्यक है। इस औषधि का दूसरा साईड एफेक्ट है - लिवर पर सूजन और पीलिया। दवा की मात्रा कम कर देने पर प्रायः यह नियंत्रण में आ जाती है।

३. साइक्लोस्पेरिन (नीओरल) - यह रिजेक्शन को नियंत्रित करने के लिये सबसे प्रभावी दवा है। इस दवा के साथ सबसे बढी समस्या इसकी अत्याधिक कीमत है।

इन सभी दवाओं का सामुहिक दुष्प्रभाव है शरीर की संक्रमण (इन्फेक्शन) से लड़ने की क्षमता (इम्यूनिटि) का कम हो जाना।

५. क्या मधुमेह जनित गुर्दा रोगी को गुर्दा प्रत्यारोपण के बाद मधुमेह नियंत्रण के लिये दवा लेना पडती है ?

गुर्दा प्रत्यारोपण के बाद मधुमेह रोगीओं को मधुमेह नियंत्रण के लिये दबाओं या इन्सुलिन की जरुरत पडती है। गुर्दा प्रत्यारोपण के बाद मधुमेह नियंत्रण अतयन्त्र प्रभावी होना आवश्यक है, अन्यतः संक्रमण होने की आशंका बढ जाती है। मृत शरीर (केडेवरिक डोनर) से निकाले गये गुर्दे और अग्नाशय (पैनक्रिआस) दोनों ही प्रत्यारोपित कर दिया जाये तो आपरेशन के बाद इनसुलिन

Scanned with CamScanner

की आवश्यकता नहीं पड़ती है। पश्चिमी देशों और अमरीका में इस पद्धति का चलन अब बढ़ रहा है।

इसी तरह उच्च रक्त चाप के मरीजों को भी गुर्दा प्रत्यारोपण के बाद उच्च रक्त चाप विरोधी दवाओं व नियमित सेवन आवश्यक है।

६. गुर्दा प्रत्यारोपण के बाद शरीर के किन हिस्सों में संक्रमण की आशंका रहती है और इसकी तुरन्त पहचान कैसे हो?

आपरेशन के बाद छाती और पेशाब के रास्ते (युरीनरी ट्रैक्ट) के संक्रमण की सम्भावना रहती है। इसके अतिरिक्त आँतियों में सूजन (गेस्ट्रो ऐन्ट्राइटिस) की आशंका भी रहती है। किसी भी तरह के इनफेक्शन की तुरन्त पहचान के लिये आवश्यक है कि निम्न में से कोई भी लक्षण होने पर रोगी, चिक्तसक से तुरन्त परामर्श करे।

१. सर्दी के साथ या बिना, तेज ज्वर आना।
२. खाँसी आना (बलगम या बिना बलगम के)।
३. पेशाब मे जलन या पेशाब का बार बार आना।
४. गुर्दा प्रत्यारोपित स्थान पर दर्द का अनुभव होना।

ऐसी स्थिति में रोगी को तुरन्त कुछ जाँचे करा लेना चाहिये जिसमें छाती का एक्स रे, टी एल सी और डी एल सी तथा युरीन कल्चर कराना आवश्यक है।

७. रोगी को कैसे पता चले कि उसका शरीर नये गुर्दे को बहिष्कृत (रिजेक्ट) कर रहा है ?

इसके लिये रोगी को पहले ६ माह नियमित रुप से खून की जाँच करानी आवश्यक है। जैसे जैसे समय बीतता जाता है, रिजेक्शन की सम्भावना कम होती जाती है। निम्न में से कोई भी लक्षण होने पर रिजेक्शन की संभावना हो सकती है।

१. पेशाब की मात्रा में अचानक कमी।
२. गुर्दा प्रत्यारोपित जगह पर दर्द।
३. पैरों में सूजन।
४. बजन का १-२ दिन में ही १-२ कि ग्राम बढ जाना।
५. रक्त चाप का अचानक अनियंत्रित हो जाना।

Scanned with CamScanner

८. गुर्दा प्रत्यारोपित रोगी को क्या क्या सावधानीया बरतनी चाहिये ?

रोगी के शरीर मे प्रत्यारोपित नया गुर्दा ठीक कार्य करता रहें, इसके लिये उसे निम्न सावधानियाँ बरतनी आवश्यक है।

१. गुर्दे को रिजेक्शन से बचाने के लिये जरुरी दवाऐं, सही मात्रा में सही समय पर लेना आवश्यक है।

२. संक्रमण (इनफेक्शन) या रिजेक्शन के किसी भी लक्षण के सामने आने पर खून व पेशाब की तुरन्त जाँच करानी चाहिये।

३. रोगी को साफ पानी (फिल्टर का या उबला हुआ) पीना चाहिये। सलाद और सब्जिओं को गरम पानी में धोकर ही इस्तेमाल करना चाहिये।

४. अन्य आवश्यक दवाऐं जैसे मधुमेह के रोगी को इन्सुलिन या मुंह से लेनेवाली दवाओं तथा उच्च रक्त चाप रोगीओं का रक्तचाप विरोधी दवाऐं नियमित रुप से लेना आवश्यक है। रक्त चाप लगभग १३० और ८० रखना आवश्यक है।

५. रोगी को किसी भी ऐसे व्यक्ति के सम्पर्क से बचना चाहिये, जिसे सर्दी, जुकाम, खाँसी या कोई और संक्रमण हो।

६. धूल, धूआँ और भीड वाले स्थानों से भी बचना जरुरी है। ऐसे स्थानों पर रोगी को चाहिये कि चेहरे पर रुमाल या मास्क का प्रयोग करे।

७. धूम्रपान और शराब का सेवन, आपरेशन के बाद हानिकारक होता है।

८. रोगी को नियमित नहाना और व्यक्तिगत स्वच्छाता पर विशेष ध्यान रखना आवश्यक है।

इसके लिये नियमित नारान छोडे रखना, बाल छोटे रखना और दिन में २ बार दातुन आवश्यक है।

९. खाने में नमक, वसा और तले हुअे भोज्य पदार्थो का कम से कम सेवन आवश्यक है।

१०. रोगी को अपने बजन पर विशेष ध्यान रखना चाहिये।

११. रोगी को नियमित अन्तराल पर ब्लड टैस्ट कराना आवश्यक है।

९. क्या गुर्दा दाता को भी दवाओं की जरुरत पडती है ?

किडनी डोनर को किसी भी तरीके की औषधि की जरुरत जीवन भर नहीं पडती और वे

Scanned with CamScanner

अपना जीवन पूर्णतः सामान्य तरीके से निभाते हैं।

१०.क्या गुर्दा प्रत्यारोपण के बाद उन रोगीओं को जिनको मधुमेह न हो, मधुमेह होने की सम्भावना बढ जाती है

प्रत्यारोपण के बाद लगभग १५-२० प्रतिशत रोगीओं के दवाओं के प्रयोग के कारण मधुमेह का रोग सामने आ सकता है। प्रायः दवाओं के कम हो जाने पर तथा भोजन में शर्करा की मात्रा नियंत्रित कर लेने पर इस तरह के मधुमेहपर नियंत्रण किया जा सकता है। कभी-कभी इन्सुलिन या ओ.एच.ए. समुह की दवाओं की आवश्यकता भी पड सकती है।

११.क्या रोगी, आपरेशन के बाद अपना सामान्य कार्य कर सकता है ?

प्रत्यारोपण के बाद रोगी अपना सामान्य कार्य भली भान्ति कर सकता है। उसे अतयन्त्र शारीरिक क्षमता की जरुरत वाले कार्यों से बचना चाहिये। शरीर को अनावश्यक रुप से थकाना भी हानिकारक हो सकता है।

१२.क्या गुर्दा प्रत्यारोपण के बाद रोगी संतान, उत्पन्न करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है ?

सफल प्रत्यारोपण के कुछ माह बाद पुरुष और महिला रोगी सन्तान उत्पन्न करने की क्षमता पा लेते है। महिला गुर्दा प्राप्तकर्ताओं को गर्म धारण के लिये सामान्यतः प्रत्यारोपण के बाद १ १/२ से २ वर्ष तक प्रतीक्षा करने की सलाह दी जाती है।

डॉ. नीर्भय कुमार

Scanned with CamScanner